अमेरिका में महिलाओं के अधिकार

जेन मोर्स

अमेरिका में महिला अधिकारों का लंबा और लगातार बेहतरी का इतिहास रहा है। हाल के दशकों में महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन, आर्थिक अवसरों और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। अमेरिकी अनुभव यह बताता है कि जैसे-जैसे महिलाओं की स्थिति बेहतर होती है, उसी के साथ उनके परिवारों, समुदायों, उनके कार्यस्थलों और राष्ट्रों की स्थिति बेहतर होती है।

कई तरह से अमेरिका में महिला अधिकार आंदोलन दासता विरोधी आंदोलन से जुड़ा है जिसका बहुत सी अमेरिकी महिलाओं ने जोरशोर से समर्थन किया। लंदन में 1840 में आयोजित विश्व दासता विरोधी सम्मेलन में महिला दासता विरोधी प्रतिनिधियों को अलग रखे जाने से एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन और दासता विरोधी लुक्रेशिया मोट्ट ने अमेरिका में महिला अधिकार आंदोलन तेज़ करने पर चर्चा की।

19वीं सदी के पहले 50 सालों में महिलाओं को कानून की नज़र में पुरुषों जितनी आज़ादी नहीं थी। वे वोट नहीं डाल सकती थीं, किसी निर्वाचित पद पर नहीं हो सकती थीं, कॉलेज नहीं जा सकती थीं और न ही अपनी आजीविका कमा सकती थीं। शादीशुदा महिलाओं को कानूनी अनुबंध करने, पति से तलाक लेने और अलग रहने पर अपने बच्चों को रखने का अधिकार नहीं था।

जुलाई 1848 में स्टैंटन और मोट्ट ने अन्य समान विचार वाली महिलाओं के साथ मिलकर सेनेका फाल्स, न्यू यॉर्क में पहला महिला अधिकार सम्मेलन आयोजित किया। इसके 'संवेदनाओं की घोषणा' में अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा के आधार पर महिलाओं के लिए बराबरी के अधिकारों की मांग की गई जिसमें वोट डालने का अधिकार शामिल था। इस सम्मेलन में 300 लोगों ने भाग लिया और 68 महिलाओं और 32 पुरुषों ने इस पर हस्ताक्षर किए।

कानूनी आर्थिक प्रगति

अमेरिकी संविधान के 19वें संशोधन के अनुमोदन के साथ वर्ष 1920 में अमेरिकी महिलाओं को आखिरकार वोट देने का अधिकार मिल ही गया। अमेरिकी समाज में राजनीति के बजाय अर्थव्यवस्था महिलाओं की भूमिका में तब्दीली लाने में ज़्यादा अहम साबित हुई और महिला अधिकार आंदोलन को ज्यादा गति मिली।

खेतों से शहरों की ओर ज़्यादा परिवारों के जाने के चलते महिलाओं की आर्थिक भूमिका कम होती गई। लेकिन अक्टूबर 1929 में शेयर बाज़ार के डूबने के साथ शुरू हुई आर्थिक मंदी ने महिलाओं को घर के बाहर काम तलाशने पर मज़बूर किया जिससे कि वे अपने परिवारों की मदद कर सकें।

द्वितीय विश्व युद्ध में पुरुषों के सेना में चले जाने के कारण कामगारों की कमी को पूरा करने के लिए महिला कामगारों की संख्या 38 फ़ीसदी तक पहुंच गई। विश्वयुद्ध के बाद सैनिक वापस आए और उन्होंने बहुत सी महिला कामगारों का स्थान ले लिया। लेकिन 1950 और 1960 के दशक के आर्थिक विकास के दौरान महिलाएं फिर से कामगार बनकर आ गईं। अपने परिवारों की आर्थिक खुशहाली में महिलाओं के योगदान के बढ़ने के साथ ही उन्होंने पाया कि कार्यस्थल पर आगे बढ़ने के प्रयास में उनके प्रति भेदभाव उन्हें कुंठित कर रहा है।

वर्ष 1964 के नागरिक अधिकार कानून के ज़रिये महिलाओं को बराबरी के अवसर दिए गए। इसके ज़रिये रोज़गार में लिंग आधारित भेदभाव पर रोक लगा दी गई। यह सुनिनिश्चत करने के लिए कि कानून के प्रावधानों पर अमल हो, महिला कार्यकर्ताओं ने मिलकर 1966 में राष्ट्रीय महिला संगठन नाउ की नींव डाली। अमेरिका में इस समय नाउ महिलाओं का सबसे बड़ा संगठन है और इसके पांच लाख सदस्य हैं। 1970 के दशक की शुरुआत में अमेरिकी कांग्रेस के दोनों चैंबरों में मौजूद महिलाओं ने महिलाओं की ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित रखा। महिलाओं को प्रभावित करने वाले जो कानून पारित किए गए, वे हैं: संतान उत्पत्ति के चुनाव में ज्यादा स्वतंत्रता, घरेलू कामगारों के लिए न्यूनतम मज़दूरी, गर्भवती महिलाओं को रोज़गार में भेदभाव पर रोक, विधवाओं और तलाकशुदा महिलाओं के पेंशन अधिकारों का संरक्षण और बच्चों की देखभाल से जुड़े कानून, बच्चों की देखभाल के लिए संघीय कोष का प्रावधान, परिवार के सदस्यों की देखभाल के लिए काम से ज़्यादा समय के लिए अवकाश के दौरान रोज़गार की सुरक्षा, हिंसा से बचाव।

बिस्मार्क में नॉर्थ डकोटा के कृषि विभाग के दफ़्तर में चार महीने की बच्ची क्रिस्टिन बॉमिलर अपने पालने में आराम कर रही है जबकि उसकी मां काम में व्यस्त है। कृषि विभाग के नियमों के मुताबिक छह महीने तक के बच्चों को उनकी मां काम पर ला सकती हैं।

जिम किर्कैड © ए.पी. डब्ल्यू डब्ल्यू. पी.

चुनौतियां बाकी हैं

अमेरिकी महिलाओं ने बराबरी के लिए अपने प्रयासों से देश के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बढ़त दर्ज़ की है। लेकिन अब भी कई चुनौतियों पर पार पाना बाकी है। उदाहरण के लिए अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2005 में 16 साल से ज़्यादा उम्र की स्त्रियों की संख्या कामगारों में 59 फ़ीसदी है, लेकिन उन्हें पुरुषों के औसतन एक डॉलर के मुकाबले औसतन 77 सेंट ही मिलते हैं। जनगणना ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक ऐसा इसलिए हो सकता है कि महिलाएं कम वेतन वाली नौकरियों में ज़्यादा हों।

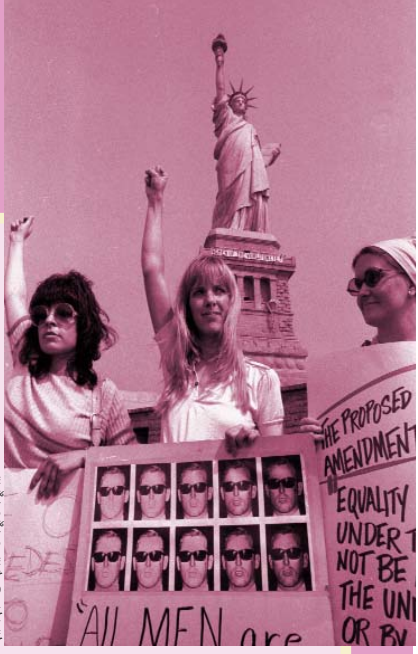

एसएचएफ © ए.पी.-डब्ल्यू डब्ल्यू. पी.

न्यू यॉर्क में अगस्त 1970 में विभिन्न महिला संगठनों की लगभग सौ महिलाओं ने बराबरी के अधिकारों के लिए प्रदर्शन किया। इन प्रदर्शनकारियों के पीछे है स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी।

कामगार महिलाओं के सामने एक और चुनौती कार्यस्थल की जरूरतों और परिवार के बीच सामंजस्य की है। दोहरी ज़िम्मेदारी वाली महिलाओं के लिए बच्चों और नौकरी दोनों में से एक की उपेक्षा का खतरा रहता है। उच्च उपलब्धि वाली कई महिलाओं को अपने परिवार को भूलना पड़ता है।

अर्थशास्त्री और प्रोफ़ेशनल महिलाओं के बारे में कई पुस्तकों की लेखिका सिल्विया एन. ह्यूलेट ने पाया है कि कार्पोरेट जगत में काम करने वालीं 42 फ़ीसदी महिलाएं 40 साल की उम्र तक नि:संतान रहती हैं, हालांकि सिर्फ 14 फ़ीसदी का इरादा ऐसा था।

मौजूदा चुनौतियों के बावजूद अमेरिकी महिलाएं अपनी उपलब्धियों पर गर्व कर सकती हैं। वर्ष 1987 में कांग्रेस द्वारा शुरू महिला इतिहास मास महिलाओं की प्रगति का जायजा लेने का अच्छा अवसर होता है।

__जेन मोर्स__ यूएसइनफो की कार्यालय लेखिका हैं।